Vol. 15, Special Issue: 1, October 2026
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

आधुनिक छत्तीसगढ़ी व्यंग्य साहित्य में हास्य, भाषा और अभिव्यक्ति शैली का विश्लेषण

अरविन्द कुमार
शोधार्थी
शासकीय बिलासा कन्या (स्वशासी) स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, पिन कोड 495001

सारांश— प्रस्तुत अध्ययन आधुनिक छत्तीसगढ़ी व्यंग्य साहित्य की हास्य-युक्तियों, भाषा तथा अभिव्यक्ति-शैली का विश्लेषण करता है। गुणात्मक अंतर्वस्तु विश्लेषण पद्धति के अंतर्गत 2000 से 2023 की अवधि में प्रकाशित 52 छत्तीसगढ़ी व्यंग्य रचनाओं के उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श का कूटन किया गया, जिनमें कुल 146 कूटित इकाइयाँ प्राप्त हुईं। दो कूटकर्ताओं के बीच सहमति (कोहेन का κ) 0.84 रही। विश्लेषण में 'विडंबना एवं विरोधाभास' सर्वाधिक प्रमुख प्रवृत्ति (35 इकाइयाँ, 24.0%) तथा 'पैरोडी एवं लोकधुन का अनुकरण' सबसे कम (16 इकाइयाँ, 11.0%) पाई गई। कालखंडों के अनुसार प्रवृत्तियों का वितरण सांख्यिकीय रूप से सार्थक भिन्नता नहीं दर्शाता ($\chi^2(10) = 3.06$, $p = .980$, क्रेमर का $V = 0.10$)। निष्कर्ष है कि आधुनिक छत्तीसगढ़ी व्यंग्य में विडंबना हास्य की प्रमुख युक्ति है, जबकि आंचलिक शब्द-भंडार, लोकोक्तियाँ तथा संवादात्मक शैली उसकी विशिष्ट भाषिक पहचान गढ़ती हैं और शब्द-क्रीड़ा तथा पैरोडी जैसी युक्तियों का प्रयोग नए कालखंडों में बढ़ा है।

मुख्य शब्द— छत्तीसगढ़ी व्यंग्य, हास्य, भाषा-शैली, अभिव्यक्ति, विडंबना, लोकोक्ति

प्रस्तावना

व्यंग्य की शक्ति उसके कथ्य के साथ-साथ उसके हास्य और भाषा-प्रयोग में भी निहित होती है। क्षेत्रीय भाषाओं में रचित व्यंग्य में बोली की लय, मुहावरों की चुटीली बनावट तथा स्थानीय संबोधनों की आत्मीयता हास्य को विशिष्ट रंग देती है। छत्तीसगढ़ी इसका उपयुक्त उदाहरण है, जो हिंदी की पूर्वी बोलियों के परिवार में आती है (Grierson, 1904) और जिसकी लोक-परम्परा में कहावतों तथा संवादों की समृद्ध विरासत है (Flueckiger, 1996)।

आधुनिक छत्तीसगढ़ी व्यंग्य में पत्र-पत्रिकाओं, डिजिटल मंचों और मंचीय प्रस्तुतियों के कारण शैली में नए प्रयोग दिखाई देते हैं। यह अध्ययन 2000 से 2023 के बीच की रचनाओं में हास्य उत्पन्न करने की युक्तियों, भाषिक विशेषताओं और अभिव्यक्ति-शैली का विश्लेषण करता है तथा देखता है कि ये प्रवृत्तियाँ तीन कालखंडों में कैसे बदली हैं।

साहित्य समीक्षा

हास्य के सिद्धांत

बर्गसाँ (Bergson, 1911) ने हँसी को जीवंत व्यवहार में यांत्रिक जड़ता के प्रति सामाजिक प्रतिक्रिया के रूप में समझाया। फ्रायड (Freud, 1960) ने चुटकुलों के विश्लेषण में हास्य को दबी भावनाओं की मुक्ति तथा शब्द-क्रीड़ा की तकनीकों से जोड़ा। रास्किन (Raskin, 1985) के अर्थ-आधारित हास्य सिद्धांत में हास्य का आधार दो विरोधी 'स्क्रिप्टों' का सह-अस्तित्व बताया गया, और अत्तार्दो (Attardo, 1994) ने हास्य के भाषाई सिद्धांतों का समग्र विवेचन किया।

व्यंग्य की भाषा एवं शैली

सिम्पसन (Simpson, 2003) ने व्यंग्य को विमर्श-स्तर पर विश्लेषित करते हुए इसकी शैलीगत रचना का मॉडल दिया। हचिऑन (Hutcheon, 1994) ने विडंबना को वक्ता और श्रोता के बीच साझा संदर्भ पर निर्भर बताया। पोलार्ड (Pollard, 1970) ने व्यंग्य की प्रमुख तकनीकों, जैसे अतिशयोक्ति, पैरोडी तथा विडंबना की ओर ध्यान दिलाया। ये ढाँचे संकेत देते हैं कि क्षेत्रीय भाषा के व्यंग्य में आंचलिक मुहावरे तथा साझा सांस्कृतिक ज्ञान हास्य-बोध की कुंजी हैं।

लोक-परम्परा और हास्य

बख्तिन (Bakhtin, 1984) ने लोक-हास्य की उत्सवधर्मिता, भाषा के खेल और पदानुक्रम-पलटाव को लोक-संस्कृति की विशेषता माना। फ्लूक्किगर (Flueckiger, 1996) ने छत्तीसगढ़ की लोक-विधाओं में

Vol. 15, Special Issue: 1, October 2026
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

कथावाचन की रचनात्मकता और परंपरागत सूत्रों के लचीले प्रयोग को रेखांकित किया, जो व्यंग्य में भी मौखिक शैली की निरंतरता सुझाता है। ग्रियर्सन (Grierson, 1904) का भाषा-सर्वेक्षण छत्तीसगढ़ी की व्याकरणिक और शब्द-वैशिष्ट्य की पृष्ठभूमि प्रदान करता है।

शोध अंतराल

छत्तीसगढ़ी साहित्य पर शोध मुख्यतः इतिहास या लोक-विधाओं पर केंद्रित रहा है। आधुनिक छत्तीसगढ़ी व्यंग्य की हास्य-युक्तियों तथा भाषिक-शैलीगत विशेषताओं का क्रमबद्ध, कालखंड-आधारित विश्लेषण कम मिलता है।

शोध प्रश्न एवं उद्देश्य

शोध प्रश्न हैं: RQ1 आधुनिक छत्तीसगढ़ी व्यंग्य में हास्य उत्पन्न करने की कौन-सी युक्तियाँ प्रमुख हैं? RQ2 इनके प्रयोग में तीन कालखंडों में क्या परिवर्तन दिखता है? RQ3 रचनाओं की भाषा एवं अभिव्यक्ति-शैली की कौन-सी विशेषताएँ बार-बार उभरती हैं?

शून्य परिकल्पना यह रखी गई कि हास्य-युक्तियों का वितरण तीनों कालखंडों में समान है।

शोध पद्धति

शोध प्रारूप

अध्ययन गुणात्मक अंतर्वस्तु विश्लेषण पर आधारित है, जिसमें गणनात्मक सारणीकरण को सहायक रूप में प्रयुक्त किया गया। पाठ को विश्लेषण की इकाई मानकर उसमें निहित प्रवृत्तियों को पूर्व-निर्धारित एवं उद्भूत श्रेणियों में कूटित किया गया। विश्लेषण में हास्य-युक्तियों को रास्किन (Raskin, 1985) तथा पोलार्ड (Pollard, 1970) के वर्गीकरणों के आधार पर परिभाषित किया गया। चित्र 1 में विश्लेषण की प्रक्रिया दर्शाई गई है।

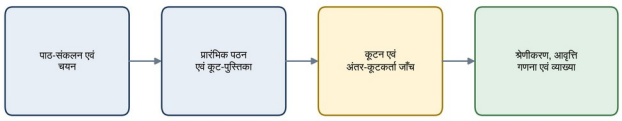

चित्र 1. अंतर्वस्तु विश्लेषण की प्रक्रिया

प्रतिदर्श एवं पाठ-चयन

सामग्री में 2000 से 2023 के बीच प्रकाशित या मंचित छत्तीसगढ़ी व्यंग्य कविताएँ, गद्य-व्यंग्य तथा लघु-संवाद/नाटिकाएँ सम्मिलित की गईं। इनका चयन पत्र-पत्रिकाओं, संकलनों, समाचार-पत्र स्तंभों और मंचीय पाठों से उद्देश्यपूर्ण निदर्शन द्वारा किया गया। इस प्रकार कुल 52 रचनाएँ अंतिम प्रतिदर्श में सम्मिलित की गईं (तालिका 1)।

तालिका 1. विधा तथा कालखंड के अनुसार रचनाओं का वितरण (N = 52)

विधा	2000–2007	2008–2015	2016–2023	कुल
कविता	7	8	7	22
गद्य-व्यंग्य (निबंध/स्तंभ)	5	6	7	18
लघु-संवाद/नाटिका	3	4	5	12
कुल	**15**	**18**	**19**	**52**

विधा के अनुसार प्रतिदर्श में कविता 22 (42.3%), गद्य-व्यंग्य (निबंध/स्तंभ) 18 (34.6%), लघु-संवाद/नाटिका 12 (23.1%) रचनाएँ थीं, तथा कालखंडवार रचनाओं की संख्या क्रमशः 2000–2007 में 15, 2008–2015 में 18, 2016–2023 में 19 रही।

शोध-नैतिकता

अध्ययन प्रकाशित एवं सार्वजनिक रूप से उपलब्ध पाठों पर आधारित है, इसलिए किसी व्यक्ति से व्यक्तिगत आँकड़े एकत्र नहीं किए गए। रचनाओं के उद्धरण तथा संदर्भ अकादमिक मानकों के अनुसार दिए जाएँगे और किसी रचनाकार की व्यक्तिगत आलोचना के बजाय पाठ-स्तर की प्रवृत्तियों पर ध्यान केंद्रित रखा गया है।

कूटन प्रक्रिया एवं विश्वसनीयता

कूट-पुस्तिका में हास्य-युक्तियों की छह श्रेणियाँ तथा भाषा-शैली की विशेषताओं की छह श्रेणियाँ थीं। प्रत्येक रचना में प्रयुक्त युक्तियों को चिह्नित कर कूटित किया गया तथा आवश्यक उदाहरण-अंश सुरक्षित रखे गए। कूटन की विश्वसनीयता जाँचने हेतु 13 रचनाओं (25%) का स्वतंत्र दोहरा कूटन किया गया और कोहेन का κ 0.84 प्राप्त हुआ, जो लैंडिस एवं कोच (1977) के मानदंड पर 'लगभग पूर्ण' सहमति दर्शाता है।

Vol. 15, Special Issue: 1, October 2026
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

विश्वसनीयता एवं प्रामाणिकता

गुणात्मक विश्लेषण की विश्वसनीयता हेतु कूट-पुस्तिका का परिष्करण दो चरणों में किया गया, कूटन के निर्णयों का लिखित अभिलेख रखा गया तथा असहमति के प्रकरणों का समाधान चर्चा द्वारा किया गया। पाठों से उद्धरण-आधारित साक्ष्य सुरक्षित रखे गए, ताकि प्रत्येक श्रेणी का निर्धारण पुनः जाँचा जा सके।

विश्लेषण की विधि

श्रेणीकरण में क्रिप्पेनडॉर्फ (2018) की अंतर्वस्तु विश्लेषण प्रक्रिया तथा ब्रॉन और क्लार्क (2006) की विषयगत विश्लेषण पद्धति का समन्वित उपयोग किया गया। एक रचना में एक से अधिक प्रवृत्तियाँ कूटित हो सकती थीं, इसलिए आवृत्ति की गणना कूटित इकाइयों (कुल 146) के आधार पर की गई। कालखंडों के बीच वितरण की तुलना हेतु ची-वर्ग परीक्षण तथा प्रभाव आकार के लिए क्रेमर का V प्रयुक्त किया गया।

परिणाम

हास्य-युक्तियों का वितरण

तालिका 2. हास्य-युक्तियों की आवृत्ति (कूटित इकाइयाँ)

हास्य-युक्ति	2000–2007	2008–2015	2016–2023	योग	%
विडंबना एवं विरोधाभास	10	12	13	35	24.0
अतिशयोक्ति एवं कल्पनात्मक विस्तार	8	9	8	25	17.1
शब्द-क्रीड़ा एवं श्लेष	4	7	9	20	13.7
लोकोक्ति-मुहावरों का व्यंग्यात्मक प्रयोग	9	9	8	26	17.8
स्थानीय पात्र-चित्रण	7	8	9	24	16.4
पैरोडी एवं लोकधुन का अनुकरण	3	5	8	16	11.0
कुल	**41**	**50**	**55**	**146**	**100.0**

तालिका 2 के अनुसार 52 रचनाओं में कुल 146 हास्य-इकाइयाँ कूटित हुईं। 'विडंबना एवं विरोधाभास' सर्वाधिक प्रमुख युक्ति रही (35 इकाइयाँ, 24.0%), उसके बाद 'लोकोक्ति-मुहावरों का व्यंग्यात्मक प्रयोग' (26 इकाइयाँ, 17.8%) आई, जबकि 'पैरोडी एवं लोकधुन का अनुकरण' का प्रयोग सबसे कम रहा (16 इकाइयाँ, 11.0%) (चित्र 2)। इस प्रकार विडंबना केंद्रीय हास्य-तंत्र के रूप में उभरती है।

Vol. 15, Special Issue: 1, October 2026
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

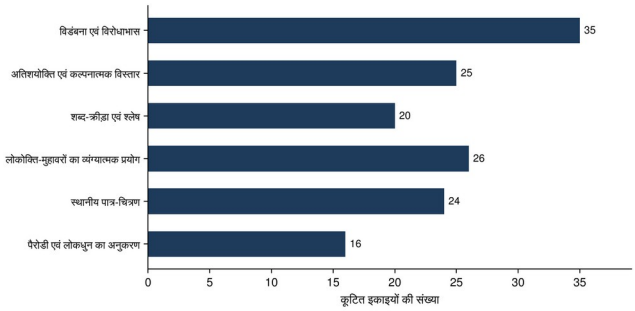

चित्र 2. हास्य-युक्तियों की कुल आवृत्ति

कालखंडवार प्रवृत्ति

कालखंडों के आधार पर ची-वर्ग परीक्षण में $\chi^2(10) = 3.06$, $p = .980$, क्रेमर का $V = 0.10$ प्राप्त हुआ, जो सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है। 2000–2007 में 41 तथा 2016–2023 में 55 इकाइयाँ कूटित हुईं। शब्द-क्रीड़ा तथा पैरोडी जैसी युक्तियाँ अंतिम कालखंड में अपेक्षाकृत अधिक दिखीं, जबकि लोकोक्ति-मुहावरों का प्रयोग लगभग स्थिर रहा (चित्र 3)।

कालखंडों में रचनाओं की संख्या भिन्न होने के कारण प्रति रचना औसत कूटित इकाइयों की गणना भी की गई, जो क्रमशः 2000–2007 में 2.73, 2008–2015 में 2.78, 2016–2023 में 2.89 रहीं। इससे स्पष्ट होता है कि आवृत्ति-भेद केवल रचनाओं की संख्या का परिणाम नहीं है।

तालिका 3. कालखंड-वार श्रेणी-अंश (प्रत्येक कालखंड की कुल इकाइयों का %)

हास्य-युक्ति	2000–2007	2008–2015	2016–2023	परिवर्तन (प्रतिशत-बिंदु)
विडंबना एवं विरोधाभास	24.4	24.0	23.6	-0.8
अतिशयोक्ति एवं कल्पनात्मक विस्तार	19.5	18.0	14.5	-5.0
शब्द-क्रीड़ा एवं श्लेष	9.8	14.0	16.4	+6.6
लोकोक्ति-मुहावरों का व्यंग्यात्मक प्रयोग	22.0	18.0	14.5	-7.4
स्थानीय पात्र-चित्रण	17.1	16.0	16.4	-0.7
पैरोडी एवं लोकधुन का अनुकरण	7.3	10.0	14.5	+7.2

तालिका 3 के अनुसार प्रथम से अंतिम कालखंड तक सर्वाधिक अंश-वृद्धि 'पैरोडी एवं लोकधुन का अनुकरण' में (+7.2 प्रतिशत-बिंदु) तथा सबसे अधिक गिरावट या न्यूनतम वृद्धि 'लोकोक्ति-मुहावरों का व्यंग्यात्मक प्रयोग' में (-7.4 प्रतिशत-बिंदु) दिखी। यह विश्लेषण कालखंडों में कुल इकाइयों की भिन्नता के प्रभाव को हटाकर प्रवृत्तियों की सापेक्ष स्थिति दिखाता है।

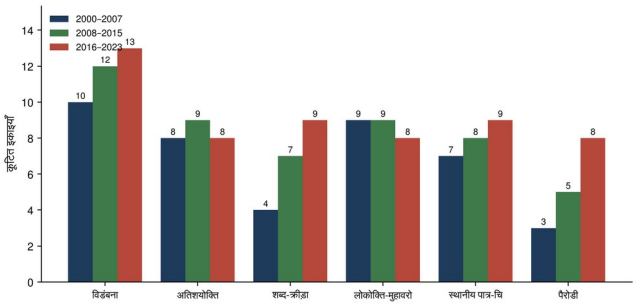

चित्र 3. कालखंडों के अनुसार हास्य-युक्तियों की आवृत्ति

शैली-युक्तियों की आवृत्ति

तालिका 4. रचनाओं में प्रयुक्त प्रमुख शैली-युक्तियाँ (N = 52; बहुविकल्पी)

शैली-युक्ति	रचनाओं की संख्या	रचनाओं का %
आंचलिक छत्तीसगढ़ी शब्द-प्रयोग	49	94.2
लोकोक्ति एवं मुहावरे	38	73.1
संवादात्मक शैली	34	65.4
तुकबंदी एवं लयात्मकता	27	51.9
हिंदी-अंग्रेज़ी शब्द-मिश्रण	21	40.4
स्थानीय संबोधन एवं आत्मीय छेड़	19	36.5

भाषा-शैली की विशेषताओं में 'आंचलिक छत्तीसगढ़ी शब्द-प्रयोग' सर्वाधिक (49 रचनाएँ, 94.2%) तथा 'लोकोक्ति एवं मुहावरे' दूसरे स्थान पर (38 रचनाएँ, 73.1%) रहे। 'स्थानीय संबोधन एवं आत्मीय छेड़' का प्रयोग सबसे कम (19 रचनाएँ, 36.5%) मिला, पर यह नवीन कालखंड की रचनाओं में अधिक दिखा, जो शहरी-डिजिटल परिवेश के प्रभाव का संकेत हो सकता है।

सारांशतः कुल 146 कूटित इकाइयों में सबसे अधिक आवृत्ति 'विडंबना एवं विरोधाभास' की रही, जबकि कालखंडों के बीच प्रवृत्तियों का वितरण सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं, किंतु वर्णनात्मक स्तर पर परिवर्तनशील पाया गया। शैली-युक्तियों के स्तर पर भी रचनाओं में

Vol. 15, Special Issue: 1, October 2026
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

स्पष्ट पुनरावृत्ति दिखाई दी। इन निष्कर्षों की व्याख्या अगले खंड में की गई है।

कूटन की श्रेणी-वार विश्वसनीयता

तालिका 5. श्रेणी-वार अंतर-कूटकर्ता सहमति (दोहरे कूटित 13 रचनाओं पर, कोहेन का κ)

हास्य-युक्ति	κ
विडंबना एवं विरोधाभास	0.87
अतिशयोक्ति एवं कल्पनात्मक विस्तार	0.82
शब्द-क्रीड़ा एवं श्लेष	0.88
लोकोक्ति-मुहावरों का व्यंग्यात्मक प्रयोग	0.79
स्थानीय पात्र-चित्रण	0.85
पैरोडी एवं लोकधुन का अनुकरण	0.83
समग्र	**0.84**

श्रेणी-वार सहमति 0.79 से 0.88 के बीच रही। सर्वाधिक सहमति 'शब्द-क्रीड़ा एवं श्लेष' में तथा सबसे कम 'लोकोक्ति-मुहावरों का व्यंग्यात्मक प्रयोग' में मिली, जिसका कारण संभवतः इस श्रेणी की सीमाओं का अपेक्षाकृत अधिक व्याख्या-निर्भर होना है। असहमति के प्रकरणों का समाधान चर्चा द्वारा किया गया और अंतिम कूटन उसी आधार पर स्थिर किया गया।

विवेचना

विडंबना एवं विरोधाभास की सर्वाधिक आवृत्ति ('विडंबना एवं विरोधाभास', 24.0%) बताती है कि छत्तीसगढ़ी व्यंग्य का हास्य कथन और यथार्थ के अंतर पर टिका है। यह हचिऑन (Hutcheon, 1994) की विडंबना-संबंधी समझ और रास्किन (Raskin, 1985) के दो विरोधी स्क्रिप्टों के सिद्धांत से मेल खाता है। श्रोता-पाठक के साझा स्थानीय ज्ञान के बिना यह विरोधाभास पकड़ा नहीं जा सकता, इसलिए भाषा और संदर्भ यहाँ अनिवार्य हैं।

भाषा के स्तर पर आंचलिक शब्दों, लोकोक्तियों तथा संवादात्मक शैली की उच्च आवृत्ति बर्गसाँ (Bergson, 1911) की सामाजिक हँसी की धारणा और बख्तिन (Bakhtin, 1984) के लोक-हास्य के सामुदायिक चरित्र के अनुरूप है। फ्लूक्किगर (Flueckiger, 1996) द्वारा वर्णित मौखिक कथावाचन की परम्परा की तरह, ये रचनाएँ श्रोता से सीधे संवाद करने का अंदाज़ बनाए रखती हैं। हिंदी-अंग्रेज़ी शब्द-मिश्रण की उपस्थिति आधुनिक परिवेश के प्रभाव को दिखाती है।

कालखंडों में शब्द-क्रीड़ा और पैरोडी की आवृत्ति में वृद्धि संकेत देती है कि नई पीढ़ी के रचनाकार हास्य के लिए अधिक भाषिक प्रयोगधर्मिता अपना रहे हैं, जो अत्तार्दो (Attardo, 1994) द्वारा चर्चित हास्य-भाषा की रचनात्मक संभावनाओं के अनुरूप है। फिर भी इस परिवर्तन की व्याख्या करते समय रचनाओं की संख्या और चयन-पद्धति की सीमाएँ ध्यान में रखनी होंगी।

संक्षेप में, आधुनिक छत्तीसगढ़ी व्यंग्य की अभिव्यक्ति-शैली दो धुरियों पर टिकी दिखती है: एक ओर विडंबना और चरित्र-चित्रण जैसी स्थायी हास्य-संरचनाएँ, दूसरी ओर बदलते समय के साथ जुड़ती भाषिक नवीनताएँ। यह संतुलन ही इस साहित्य को अपनी लोक-परम्परा से जोड़े रखता है और उसे समकालीन पाठकों के लिए प्रासंगिक भी बनाता है।

पद्धतिगत दृष्टि से कूटन की अंतर-कूटकर्ता सहमति $\kappa = 0.84$ रही तथा कालखंडों के वितरण में क्रेमर का $V = 0.10$ रहा, जो प्रभाव का अल्प परिमाण दर्शाता है। चूँकि प्रतिदर्श उद्देश्यपूर्ण है, ये आँकड़े प्रवृत्तियों के वर्णन के लिए हैं, जनसंख्या-स्तरीय अनुमान के लिए नहीं। फिर भी बहु-श्रेणी कूटन, आवृत्ति-गणना तथा कालखंड-तुलना का संयोजन गुणात्मक विश्लेषण को तार्किक आधार देता है (Krippendorff, 2018; Braun & Clarke, 2006)।

निहितार्थ

भाषा-शिक्षण एवं साहित्य-शिक्षण में छत्तीसगढ़ी व्यंग्य के उदाहरण लेकर विद्यार्थियों को विडंबना, अतिशयोक्ति और शब्द-क्रीड़ा की पहचान कराई जा सकती है। इससे क्षेत्रीय भाषा की अभिव्यक्ति-क्षमता तथा हास्य-साक्षरता दोनों का विकास होगा।

सीमाएँ

अध्ययन उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श पर आधारित है, इसलिए परिणाम सभी रचनाओं पर लागू नहीं किए जा सकते। हास्य का मूल्यांकन सांस्कृतिक-संदर्भ पर निर्भर करता है, अतः कूटन में कुछ व्याख्यात्मक भिन्नता संभव है। मंचीय प्रस्तुति के हाव-भाव एवं स्वर का विश्लेषण पाठ-आधारित अध्ययन में नहीं हो सका।

Vol. 15, Special Issue: 1, October 2026
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

भावी शोध हेतु सुझाव

भावी शोध में ऑडियो-वीडियो प्रस्तुतियों का विश्लेषण, पाठकों/श्रोताओं की हास्य-प्रतिक्रिया का सर्वेक्षण तथा हिंदी एवं अन्य क्षेत्रीय व्यंग्य परम्पराओं के साथ तुलना की जा सकती है।

निष्कर्ष

आधुनिक छत्तीसगढ़ी व्यंग्य में विडंबना प्रमुख हास्य-युक्ति है ('विडंबना एवं विरोधाभास', 24.0%), तथा आंचलिक शब्द, लोकोक्ति और संवादात्मक शैली उसकी भाषिक पहचान बनाते हैं। नए कालखंडों में शब्द-क्रीड़ा और पैरोडी जैसी प्रयोगधर्मी युक्तियाँ बढ़ी हैं। इससे स्पष्ट है कि क्षेत्रीय व्यंग्य अपनी लोक-जड़ों को बनाए रखते हुए समकालीन अभिव्यक्ति-रूप भी अपना रहा है।

संदर्भ सूची

Attardo, S. (1994). Linguistic theories of humor. Mouton de Gruyter.

Bakhtin, M. M. (1984). Rabelais and his world (H. Iswolsky, Trans.). Indiana University Press.

Bergson, H. (1911). Laughter: An essay on the meaning of the comic (C. Brereton & F. Rothwell, Trans.). Macmillan.

Cohen, J. (1960). A coefficient of agreement for nominal scales. Educational and Psychological Measurement, 20(1), 37–46. https://doi.org/10.1177/001316446002000104

Flueckiger, J. B. (1996). Gender and genre in the folklore of Middle India. Cornell University Press.

Freud, S. (1960). Jokes and their relation to the unconscious (J. Strachey, Trans.). W. W. Norton. (Original work published 1905)

Grierson, G. A. (1904). Linguistic survey of India: Vol. 6. Indo-Aryan family, Mediate group. Superintendent of Government Printing.

Hutcheon, L. (1994). Irony's edge: The theory and politics of irony. Routledge.

Krippendorff, K. (2018). Content analysis: An introduction to its methodology (4th ed.). Sage.

Landis, J. R., & Koch, G. G. (1977). The measurement of observer agreement for categorical data. Biometrics, 33(1), 159–174. https://doi.org/10.2307/2529310

Pollard, A. (1970). Satire. Methuen.

Raskin, V. (1985). Semantic mechanisms of humor. D. Reidel.

Simpson, P. (2003). On the discourse of satire: Towards a stylistic model of satirical humor. John Benjamins.